द्वितीय अध्याय
बून्दी जिले का भौगोलिक परिचय

मौर्यविक आधार :

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

इस जिले का नाम बून्दी नगर के नाम पर पड़ा है जो कि नाल नाम की 
एक तंग घाटी में स्थित है। कुंदवा, मीणा सरदार जैता का बादा था जिससे साथ
देवा ने ई. सन् 1342 में इस प्रदेश को जीत लिया था। उसी ने कुंदवा की नाल 
के मध्य बून्दी शहर को बंद कर इस प्रदेश का नाम हाड़वाड़ी अर्थात हाड़ों का 
निवास स्थान रखा था। बाद में इन लोगों ने चम्बल के उस नगर वर्तमान कोटा 
जिले के नये इलाकों को जीतकर अधीन कर लिया। इसके बाद यह समस्त 
प्रदेश हाड़वाड़ी अर्थात हाड़वाड़ी कहलाने लगा परन्तु इसके शासक बून्दी के राव 
ही कहलाते थे। जहाँगीर के शासन काल में कोटा को बून्दी से अलग कर दिया 
गया, शाहजहाँ ने जिसे शाही सनद से पक्का कर दिया, परन्तु बून्दी और कोटा 
दोनों मिलाकर हाड़वाड़ी ही कहलाते थे।

राजस्थान के दक्षिण-पूर्व में स्थित बून्दी जिला इतिहास में प्रम, वलिदान, 
शौर्य व स्वागत की कहानियाँ समेत हुए ऐतिहासिक स्मारक, सांस्कृतिक समृद्धि 
और पुरातत्त्व के वैभव से सरोवर है। कुंदवा, बावड़ियों की अधिकांश का कारण 
बून्दी को 'बावड़ियों की नगरी' (City of Steepwell) तथा मन्दिरों की अधिकांश का 
कारण 'छोटी काशी' [A Holy Hindu Place] कहा जाता है। राजस्थान के प्रसिद्ध 
इतिहासकार एवं महाकवि सूर्यमल्ल भिन्नान की जन्मस्थली होने का गौरव प्राप्त 
है।

प्रशासनिक परिचय :-

25 मार्च, 1948 में बून्दी विभाग राजस्थान संच में सम्मिलित हुई उस 
समय इसके सम्पूर्ण क्षेत्र को एक दी ही इकाई के रूप में रखा गया। परन्तु सन् 
1949 में बून्दी राजस्थान के गठन के समय इसके 30 गाँव टोंक जिले में मिला
दिये गये और कोटा जिले के आंतर्द ठिकाने के सात गाँव कूदी में मिला दिये गये। 19 जनवरी, 1983 को कोटा जिले की पीपल्दा पंचायत समिति का इन्द्रगढ़ क्षेत्र (इन्द्रगढ़ नगर तथा 64 गाँव) कूदी जिले में समर्पित किये गये। जिले की स्थापना के समय दो उपखण्ड, कूदी और नैनवा तथा 5 तहसीलें बूदी, तालेढा, कंजोराय पाटन, नैनवा और हिण्डोली थी। दिनांक 15.09.1962 को तालेढा तहसील को समाप्त कर दिया तथा चार तहसीलें रह गईं।

वर्ष 1991 में इन्द्रगढ़ को तहसील का दर्जा दिया और पुन: 5 तहसीलें हो गईं। 2012 में सरकार ने राज्य में नई तहसीलों के गठन को लेकर जो उसके अंतर्गत राजस्थान मण्डल ने अपनी रिपोर्ट जून, 2012 में राजस्थान विभाग में सौंपी। जिले में रिपोर्ट के अनुसार तालेढा को जिले की छठी तहसील बनाया गया है। वर्तमान समय में जिले को 5 उपखण्डों एवं 5 तहसीलों (कूदी, कंजोराय पाटन, इन्द्रगढ़, हिण्डोली, नैनवा, तालेढा) में विभाजित किया गया। कारण उपत्तहसील का दर्जा प्राप्त कर चुका है। कसर, दवलाना, लखैरी, डावी को उपत्तहसील बनाने की घोषणा हो चुकी है। सारणी 2.1 से कूदी जिले की प्रशासनिक संरचना सम्पूर्ण है।

भौगोलिक स्थिति —

यह जिला राजस्थान के दक्षिण-पूर्व में एक अनिष्टम समलंब चतुर्फल जैसा आकार लिए 24°59'11" व 25°53'11" उत्तरी अक्षांश तथा 75°19'30" व 76°19'30" पूर्वी देशांतर के मध्य में स्थित है। इसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल (सन् 2013) 5850.50 वर्ग किलोमीटर है। इसकी लम्बाई पूर्व से पश्चिम तक अधिकतम 111 किलोमीटर तथा उत्तर से दक्षिण तक अधिकतम 104.6 किलोमीटर है। इसका मुख्यालय बूदी शहर में है। इस जिले के उत्तर में ठाक, सवाईमाधोपुर, दक्षिण-पश्चिम में चित्तूड़गढ़ और पश्चिम में मीलवाड़ा जिले पड़ते हैं। इसके दक्षिण व पूर्व में कोटा जिला है और इन दोनों जिलों को

1. स्थल— आर्थिक समीक्षा 2012–13, जिला कूदी।
<table>
<thead>
<tr>
<th>सारणी 2.1</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>प्रशासनिक संरचना 2012-13</td>
</tr>
</tbody>
</table>

<table>
<thead>
<tr>
<th>गद</th>
<th>इकाई</th>
<th>तिलकण</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>उपखण्ड</td>
<td>संख्या</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>तहसील</td>
<td>संख्या</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>पंचायत समिति</td>
<td>संख्या</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>कुल आबाद ग्राम (राजस्थान)</td>
<td>संख्या</td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>कुल गैर आबाद ग्राम (राजस्थान)</td>
<td>संख्या</td>
</tr>
<tr>
<td>6.</td>
<td>कुल आबाद ग्राम (जनसंख्या 2011)</td>
<td>संख्या</td>
</tr>
<tr>
<td>7.</td>
<td>कुल गैर आबाद ग्राम (जनगणना 2011)</td>
<td>संख्या</td>
</tr>
<tr>
<td>8.</td>
<td>कुल नगर</td>
<td>संख्या</td>
</tr>
<tr>
<td>9.</td>
<td>कुल ग्राम पंचायत</td>
<td>संख्या</td>
</tr>
<tr>
<td>10.</td>
<td>मू.अ.विद्युत संख्या</td>
<td>संख्या</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्रोत — जिला सारिखबाद की विभाग, बूढी।

सारणी 2.1

भूगर्भिक संरचना व उद्योग —

भूगर्भिक संरचना — बूढी जिले की चहारों अरावली और कृष्णाचार्य उच्च अंतर योजना की है जो राजस्थान के विभाग सीमा तटका को पूरा दूरसे से पृथक है। भू-विज्ञान की दृष्टि से चहारों आर्कियन चहारों की कायान्तरित स्थिति के अन्तर्गत आती है। नाइट्स, शिक्षा, हिस्टोर्याल उपक्षेत्र सत्र चूना पर्याटन से बनी है, जो कि प्लास्टिक समूह तथा अरावली भूभूरी पूर्व 250 करोड़ वर्ष पुरानी मानी जाती है तथा कही-कही संग्रामसर और ग्रेनाइट के वर्धक खंड भी मिलते हैं। उत्तरी मेलान में स्तेन, फिलाईट और इनके बीच में क्वार्ट्जाइट और ग्रेनाइट संग्रामसर पाये जाते हैं। इनके क्षेत्रों में कमूर, रीवा, भांडेर समूहों की चहारें में बलुआ पत्थर, परतदार चहारों और चूना पत्थर भी पाये जाते हैं। (स्रोत — भू-वैज्ञानिक सर्वेक्षण विभाग, परिवर्त वृक्ष, जयपुर। (FIG.2)

भारत मानक व्यूहों के तत्त्वाधारण में तैयार किये गये भूकम्पनीय मानचित्र में बूढी को प्रथम जोन में स्था गया है जो 'बी' स्तर के अन्तर्गत आते हैं संयुक्त राज्य अमेरिका और अन्य निकसित देशों में जो अध्ययन हुए हैं उसमें IV
की क्षमता रिक्टर से 2.75 सेंटीमीटर तक आती है जो औसतन 13 सेंटीमीटर किसी भी शैतिज दिशा (साइडल डायरेक्शन) में अपना प्रभाव छोड़ती है। इस तरह के मूक दृष्टि से पहली जमीन या चट्टान पर बने हुए मकान की अपेशा जमीन पर बने हुए मकानों पर अधिक प्रभाव होते हैं जब यह अपेशा की जाती है कि आवासीय मकान को उचित धारात्मक पर निर्मित किया जाए।

बूढी जिले को भौतिक संरचना के आधार पर दो भागों में बांटा गया है:

1. उत्तर-पश्चिमी भुमाग:
   यह पर्वतीय क्षेत्र है और इस क्षेत्र की भूमि कंकड़ और सुखदी है। जो तालाब रंग की है। विशाल लंबाई के अवशेष एवं जल प्रपात इस प्रदेश की जीतेल मू-आकृतिक संरचना को दर्शाते हैं।

   बूढी तहसील के दक्षिणी पश्चिमी भाग को 'वाम' कहा जाता है। यह रुद्रा पश्चिम से युक्त पश्चिमी भाग है, जबकि दूसरा भाग जो हिंदुस्तानी तहसील में पड़ता है, 'खेराड़' कहलाता है।

2. दक्षिण-पूर्वी भाग:
   बूढी जिले की तालेबाजा तहसील का आधा भाग, केंद्रोपायपाटन व इंद्रगढ़ तहसील का भाग आता है।

उपचार:
इस प्रदेश के उत्तरी-पूर्वी और दक्षिण-पश्चिमी दिशाओं में दो पर्वत अरणियाँ फैली हुई हैं, जिनकी समुद्र तल से औसत ऊँचाई 300 से 1793 फीट तक हैं। इस अरणी की सबसे उम्री चौड़ी हिंदुस्तानी तहसील के स्रोत गांव के पास है, जिसकी ऊँचाई समुद्रतल से 545.60 फीट है। जिले का पूर्वी हिस्सा इंद्रगढ़ तहसील व केंद्रोपायपाटन तहसील का उत्तरी भाग 750 फीट से कम ऊँचा है। जिले का उत्तरी भाग मध्यवर्ती पहाड़ी क्षेत्र को छोड़कर शेष समूह मध्यवर्ती भाग तथा दक्षिणी पूर्वी भाग की ऊँचाई 750-1000 फीट के मध्य है। उत्तरी-पश्चिमी व दक्षिण भाग की ऊँचाई 1000 फीट से अधिक है। (FIG.3)
(FIG. 2 & 3)
पहाड़ियों के बीच दूर तक ऐसा कोई रास्ता नहीं मिलेगा जिससे पहाड़ियों को पार करके एक तरफ से दूसरी तरफ जाया जा सके। उन्हें पार करने के लिए केवल चार दर्रे हैं – पहला बून्दी शहर के पास, जिससे होकर देखली-कोटा सड़क जाती है; दूसरा पूर्व की ओर काफी आगे जाकर ज़ैनियास के पास, जिससे होकर टोक को सीधी सड़क जाती है; तीसरा सामग्री व खटकड़ के बीच, जिसमें से मेज नदी बहती है तथा चौथा उत्तर-पूर्व में लाखेश्री के पास है।
बून्दी जिले का मू-आकृति विज्ञान :-  बून्दी जिले को मू-आकृति की दृष्टि से मुख्यतः तीन भागों– नद जलनित, अनावज्ञान जलनित एवं संरक्षणात्मक जलनित उत्पत्ति कारकों के आधार पर आठ उप विभागों में विभाजित किया गया है। जो मानविक-4 द्वारा प्रदर्शित है। (FIG.4)

बून्दी जिले के मौसम वर्गदशेय :-
बून्दी जिले को उच्चाव, आमवाह तंत्र, डाल, मृदा, वनस्पति एवं वर्षा के आधार पर चार मौसम वर्गदशेयों में विभाजित किया गया है। (FIG.5)

1. पश्चिमी उच्च भूमि प्रदेश :-
पश्चिमी उच्च भूमि प्रदेश के अन्तर्गत हिंदोली तहसील का पश्चिमी भाग तथा बून्दी तहसील का दक्षिणी-पश्चिमी भाग शामिल है।
इसकी समुद्र तल से ऊँचाई 1200 फीट है। इस प्रदेश का क्षेत्रफल 1427 वर्ग किमी है, जो जिले के लगभग 25 प्रतिशत भाग पर की गई हुआ है।
इस प्रदेश में अपावली एवं विनियम क्रम की शैलें मिलती हैं। इस प्रदेश में भीमलट गाँव है जो मांगली नदी के बहरा क्षेत्र में पड़ता है।
जिले की 42 प्रतिशत वनस्पति इसी क्षेत्र में मिलती हैं।

2. असममल मेंदाबी प्रदेश :-
यह प्रदेश जिले के उत्तरी-पश्चिमी भाग में 1424 वर्ग किमी क्षेत्र में फैला हुआ है, जो जिले का लगभग 25 प्रतिशत है। नैनवां तहसील के 80 प्रतिशत तथा हिंदोली तहसील के 50 प्रतिशत गाँव इस प्रदेश के
BUNDI DISTRICT
PHYSICAL DIVISIONS

INDEX - NAME OF DIVISION

- CENTRAL HILLS
- WESTERN HIGHLAND
- UNDULATING PLAIN

CMAMBAL - MEJ 'DOAB'

SOURCE - BASIS ON MAPS PUBLISHED BY SURVEY OF INDIA, DEHRADOON

SCALE
KM 10  5  0  10 KM

(FIG. 5)
अन्तर्गत आते हैं। इस प्रदेश की समुद्र तल से ऊँचाई लगभग 1000 फीट है। मेज एवं अवसादी शैलें इस क्षेत्र में फैली हुई हैं। इसमें प्रदेश का मात्र 9.2 प्रतिशत भाग ही वनाच्छादित है।

3. केंद्रीय पर्वतीय प्रदेश —

दुन्दी जिले के मध्य हिरंडोली, नैनवा व बुद्धी तहसीलों में शीढ की तरह विस्तार एवं अवसादी की दोहरी श्रेणियाँ 96 किमी लम्बाई में फैली हैं। पहाडियों की ऊँचाई 1000 से 1793 फीट तक मिलती है। यह प्रदेश 499 वर्ग किमी क्षेत्र पर, जिले के 9 प्रतिशत भू-भाग में फैला हुआ है।

4. चम्बल-मेज दोआब बेसिंस —

प्रशासनिक दृष्टि से कोपाटन, इन्द्रगढ़, तालेजा एवं बुद्धी तहसील का एक बड़ा भाग इसके अंतर्गत आता है। चम्बल-मेज दोआब बेसिंस जिले का सबसे बड़ा भौगोलिक प्रदेश है, जो 2232 वर्ग किमी क्षेत्र में फैला हुआ है। जिले के कुल क्षेत्रफल के 40 प्रतिशत भाग पर फैला है।

यह भौगोलिक प्रदेश मध्यवर्ती पर्वतीय भाग से चम्बल नदी के किनारे तक फैला हुआ है। समुद्र तल से ऊँचाई 1000 फीट से कम तथा पूर्वी भाग में 700 फीट तक मिलती है। यहाँ नदियों द्वारा निर्मित मिट्टी का जमाल है। वनों का विस्तार केवल 7 प्रतिशत भू-भाग पर है।

जलवायु —

जिले की जलवायु साधारणतः अर्ध-आर्द्र है जो दक्षिणी-पश्चिमी मानसून के स्थलपकल को छोड़कर शुष्क ही है। दिसंबर से फरवरी तक शीतकाल उसके पश्चात जून के तीसरे सप्ताह तक ग्रीष्मकाल के लघुशाम्भाव दक्षिण-पश्चिम मानसून का मौसम आता है जो लगभग आधे सितंबर तक रहता है। इसके बाद लगभग बाई महीने का मानसूनतत्त्व काल होता है। (मौसम विभाग-पुणे) (FIG.6)

वर्षा — जिले में अमायुस, गुड़ा डेम, चाँदा का तालाब, बहुधा बाँध एवं कार्यालय जल संरक्षण खण्ड-बुद्धी में वर्षा मापक केन्द्र स्थित है, जो प्रातः 9 बजे तक वर्षा के ऑफिस में निघन नहीं करते हैं। जिले में औसत वाष्प्य वर्षा 724.10
मिलीमीटर है। लगभग 95 प्रतिशत वार्षिक वर्षा जून से शितम्बर के मध्य तक होती है। वर्षा के औसत में प्रत्येक वर्ष में अन्तर सहह है यदि 50 वर्ष का औसत लें तो 1901 से 1950 की कालावधि में 1908 में सामान्य वर्षा से सर्वाधिक वर्षा 193\% हुई और 1941 में सामान्य से न्यूनतम 40\% हुई। इन प्रमाणांकों की अवधि में से 17 वर्ष ऐसे रहे जिसमें वर्षा सामान्य से 80\% कम रही तथा लगभग दो वर्ष तक सामान्य से 80\% ही वर्षा हुई। 50 में से 29 वर्ष ऐसे थे, जब जिले में वार्षिक वर्षा 500 से 1000 मिलीमीटर के बीच रही थी। जिले में औसत रूप से 35 दिन वर्षा के (2.5 मिलीमीटर से अधिक वर्षा वाले दिन) होते हैं। जिले में किसी भी समय कर अग्रितिक्षत की गई 24 घंटों में हुई अधिकतम वर्षा 413.3 मिलीमीटर 1942 को हिंदोधोली में अंकित की गई थी (भौसम विभाग-पुणे)।

### सारणी 2.2
#### दूसरे जिले में वार्षिक वर्षा
(ऑफ़ केस 1980 से 2013)

<table>
<thead>
<tr>
<th>परिसीमा मिलीमीटर में वर्षा की संख्या</th>
<th>परिसीमा मिलीमीटर में वर्षा की संख्या</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>301–400</td>
<td>01</td>
</tr>
<tr>
<td>401–500</td>
<td>05</td>
</tr>
<tr>
<td>501–600</td>
<td>07</td>
</tr>
<tr>
<td>601–700</td>
<td>11</td>
</tr>
<tr>
<td>701–800</td>
<td>03</td>
</tr>
<tr>
<td>801–900</td>
<td>05</td>
</tr>
<tr>
<td>901–1000</td>
<td>02</td>
</tr>
<tr>
<td>1001–1100</td>
<td>NIL</td>
</tr>
<tr>
<td>1101–1200</td>
<td>NIL</td>
</tr>
<tr>
<td>1201–1300</td>
<td>NIL</td>
</tr>
<tr>
<td>1301–1400</td>
<td>NIL</td>
</tr>
<tr>
<td>1401–1500</td>
<td>NIL</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्रोत – उपमहानगरपालिका वैचारिक (क्लाइमेटोलॉजी एंड जियोफिजिक्स- पुणे)

राजस्व मण्डल, अज्ञात के प्रतांक 7129–15 दिनांक 29.08.88 के अनुसार सामान्य वर्षा का मापदंड तहसील अनुसार निम्न प्रकार हैः —
आॅसॅं रामान्य वर्ष तहसीलवार

<table>
<thead>
<tr>
<th>तहसील</th>
<th>सामान्य वर्ष</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>बूदी</td>
<td>773.4 मिमी.</td>
</tr>
<tr>
<td>लालेडा</td>
<td>654.9 मिमी.</td>
</tr>
<tr>
<td>केशोराय पाटन</td>
<td>803.3 मिमी.</td>
</tr>
<tr>
<td>इंद्रगढ़</td>
<td>765.3 मिमी.</td>
</tr>
<tr>
<td>नैनवा</td>
<td>610.1 मिमी.</td>
</tr>
<tr>
<td>हिण्डोली</td>
<td>737.7 मिमी.</td>
</tr>
<tr>
<td>जिला औसत</td>
<td>724.10 मिमी.</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्नेते – उपमहानिदेशक वैचारिका (क्लाइमेटोलॉजी एण्ड जियोफिजिक्स– पुणे)

वर्ष 1980 से 2013 तक 34 वर्षों के मध्य केवल 10 वर्ष (1982, 1986,
वर्ष हुई। सर्वाधिक 2013 में 924.30 मिमी तथा सबसे कम वर्ष 352.9 मिमी
2002 में हुई। तालिका 2.4 एवं आरेख 2.1 में बूदी जिले में तहसीलवार वर्ष
(2001 से 2013 तक) विवरण प्रस्तुत है। (तालिका 2.4 एवं आरेख 2.1)
तापमान –

जिले में केवल एक ही मौसम विज्ञान सामग्री वैचारिका बूदी में स्थापित
थी, जो वर्तमान समय में बंद है। नवम्बर के मध्य से जनवरी के अंत तक,
आमतौर पर वर्ष का सबसे ठंडा समय होता है जब दिन व रात का तापमान
गिरकर अधिकतम 25° व न्यूनतम 10° सेंटीग्रेड हो जाता है। शीतकाल के
दौरान मौसम संबंधी विषयों के फलस्वरूप शीतलहर इस जिले को प्रभावित
करती है, उस समय न्यूनतम तापमान जमाव बिन्दू से 2°से 3° से पहले होता
है। फरवरी में जनवरी की तुलना में तापमान कुछ कम ठंडा होता है। लेकिन
मार्च महीने में तापमान तेजी से वृद्धि होती है। मई मासों अधिकतम तापमान
वाला महीना होता है जिसमें तापमान 46° से 47° सेंटीग्रेड हो जाता है। ग्रीष्म
ऋतु में यहकर गर्म हवा लू चलती है। घूल तरी आधिय़ा चलती है।
Bundi
Climatic Conditions

Annual average rainfall in mm
Annual mean temperature in °C

References
Rainfall Zones (in mm)

- Less than 600
- 600-700
- 700-800
- Above 800
## सारणी - 2.4
बूंदी जिले में तहसीलवार वर्षा मिलीमीटर में (2001 से 2013 तक)

<table>
<thead>
<tr>
<th>वर्ष</th>
<th>बूंदी</th>
<th>लालेड़ा</th>
<th>के.पाटन</th>
<th>इन्द्रगढ़</th>
<th>नैनवा</th>
<th>जिलाधिकारी</th>
<th>कुल</th>
<th>औसत</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>2001</td>
<td>824.0</td>
<td>990.6</td>
<td>786.5</td>
<td>794.0</td>
<td>649.4</td>
<td>810.4</td>
<td>4854.9</td>
<td>809.2</td>
</tr>
<tr>
<td>2002</td>
<td>275.5</td>
<td>269.0</td>
<td>334.5</td>
<td>472.0</td>
<td>259.2</td>
<td>507.0</td>
<td>2117.2</td>
<td>352.9</td>
</tr>
<tr>
<td>2003</td>
<td>754.0</td>
<td>593.0</td>
<td>453.0</td>
<td>808.0</td>
<td>371.0</td>
<td>1176.0</td>
<td>4155.0</td>
<td>692.5</td>
</tr>
<tr>
<td>2004</td>
<td>848.0</td>
<td>544.0</td>
<td>484.0</td>
<td>978.0</td>
<td>503.0</td>
<td>625.0</td>
<td>3982.0</td>
<td>663.7</td>
</tr>
<tr>
<td>2005</td>
<td>545.8</td>
<td>606.0</td>
<td>677.0</td>
<td>691.1</td>
<td>540.0</td>
<td>472.0</td>
<td>3531.9</td>
<td>588.7</td>
</tr>
<tr>
<td>2006</td>
<td>707.0</td>
<td>790.0</td>
<td>586.0</td>
<td>551.5</td>
<td>508.5</td>
<td>572.0</td>
<td>3715.0</td>
<td>619.2</td>
</tr>
<tr>
<td>2007</td>
<td>748.5</td>
<td>592.0</td>
<td>527.0</td>
<td>560.0</td>
<td>708.0</td>
<td>518.0</td>
<td>3653.5</td>
<td>608.9</td>
</tr>
<tr>
<td>2008</td>
<td>602.0</td>
<td>534.5</td>
<td>824.0</td>
<td>871.0</td>
<td>455.0</td>
<td>565.0</td>
<td>3851.5</td>
<td>641.9</td>
</tr>
<tr>
<td>2009</td>
<td>575.0</td>
<td>429.0</td>
<td>557.0</td>
<td>374.0</td>
<td>323.0</td>
<td>281.0</td>
<td>2539.0</td>
<td>423.2</td>
</tr>
<tr>
<td>2010</td>
<td>662.0</td>
<td>732.0</td>
<td>678.0</td>
<td>505.3</td>
<td>568.0</td>
<td>776.0</td>
<td>3921.3</td>
<td>653.6</td>
</tr>
<tr>
<td>2011</td>
<td>750.0</td>
<td>931.6</td>
<td>765.0</td>
<td>936.8</td>
<td>873.0</td>
<td>792.0</td>
<td>5048.4</td>
<td>841.4</td>
</tr>
<tr>
<td>2012</td>
<td>736.0</td>
<td>591.0</td>
<td>602.0</td>
<td>472.9</td>
<td>561.0</td>
<td>827.0</td>
<td>3789.9</td>
<td>631.7</td>
</tr>
<tr>
<td>2013</td>
<td>701.0</td>
<td>748.0</td>
<td>980.0</td>
<td>1048.0</td>
<td>1114.0</td>
<td>955.0</td>
<td>5546.0</td>
<td>924.3</td>
</tr>
</tbody>
</table>

### स्रोत — रिकॉर्डिंग स्टेशन, बूंदी।

### बूंदी जिला तहसीलवार वर्षा मिलीमीटर में (2001-2013)

(आरेख 2.1)
दक्षिण पश्चिम से आने वाले मानसून के साथ तापमान में गिरावट आ जाती है सितम्बर के मध्य में दिन का तापमान फिर बढ़ना शुरू होता है जो अक्टूबर के महीने में फिर अधिकतम तक पहुँच जाता है। (तालिका - 2.5)
आदर्ता :- दक्षिण पश्चिम मानसून के काल को छोटकर वर्ष के बाद दिनों में हवा शुक्र रहती है। गर्मी के मौसम में दोपहर बाद आपेक्षिक आदर्ता काफी कम हो जाती है। आरेख 2.2 से जिले का माहवार तापमान एवं आदर्ता स्राफ़ है।
अपवाह तंत्र :-
बूढ़ी जिले में चम्बल नदी जिले की दक्षिण-पूर्वी सीमा बनाती है। इसकी चौड़ाई 183 से 366 मीटर है। चम्बल का पौराणिक नाम 'चवमण्डली' है। इसे 'कामडो' भी कहते हैं। प्रायोजन सीमाधल केशोराय पात्र के पास इसी कंडार पहुंच अधिक है।
चम्बल नदी भारत की एकमात्र ऐसी नदी है जो दक्षिण से उत्तर की दिशा की ओर प्रवाहित होती है।
मेज नदी जो चम्बल की प्रमुख सहायक नदी है, भीलवाड़ा जिले के मानगढ़ के दो भागों में समीप बूढ़ी जिले में प्रवेश करती है। मेज नदी हिजंदोली तहसील में 56 किमी व अन्य तहसीलों में 88 किमी बहती है। खटकड़ के पास यह नदी मध्यवर्ती पहाड़ी शृंखला को काटकर अपना रूप बनाते हुए आगे काफी दूर तक पहाड़ियों के समानांतर बहकर सेनपुर गांव के पास चम्बल में मिल जाती है।
अन्य प्रमुख नदियों में मेज की सहायक नदी उत्तर में बजान और दक्षिण में कुराल है। कुराल की सहायक नदी मांगली तथा मांगली की सहायक नदी घोड़ा पाढ़ा नदी है जो विजेतिया झील से निकलकर उत्तर-पूर्व में तालेज़ा में बहती हुई अप्पड़ा गांव की पास मांगली नदी में मिल जाती है। गरड़दा के पास घोड़ा पाढ़ा की सहायक छाज नदी पर गरड़दा बांध बनाया जाना प्रस्तावित है।
इसकी मुख्य सहायक नदी तालेज़ा है।
इसके अलावा शेसरोड़गढ़ तहसील (विलोड़गढ) से आयस नदी निकलकर वाही के पास चम्बल में मिल जाती है। (FIG.7)
सारणी – 2.5
बूदी जिले में तापमान एवं आर्द्रता—2013

<table>
<thead>
<tr>
<th>महीना</th>
<th>दैनिक अधिकतम ताप.°C</th>
<th>दैनिक न्यूनतम ताप.°C</th>
<th>महीने में अधिकतम ताप.°C</th>
<th>महीने में न्यूनतम ताप.°C</th>
<th>सापेक्ष आर्द्रता (%)</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>जनवरी</td>
<td>24.5</td>
<td>10.6</td>
<td>30.1</td>
<td>6.5</td>
<td>49.0</td>
</tr>
<tr>
<td>फरवरी</td>
<td>28.5</td>
<td>13.1</td>
<td>34.2</td>
<td>8.3</td>
<td>38.0</td>
</tr>
<tr>
<td>मार्च</td>
<td>34.1</td>
<td>18.5</td>
<td>39.2</td>
<td>13.4</td>
<td>26.0</td>
</tr>
<tr>
<td>अप्रेल</td>
<td>39.0</td>
<td>24.4</td>
<td>43.1</td>
<td>19.1</td>
<td>18.5</td>
</tr>
<tr>
<td>मई</td>
<td>42.6</td>
<td>29.7</td>
<td>45.9</td>
<td>24.6</td>
<td>22.0</td>
</tr>
<tr>
<td>जून</td>
<td>40.3</td>
<td>29.5</td>
<td>44.7</td>
<td>24.1</td>
<td>41.0</td>
</tr>
<tr>
<td>जुलाई</td>
<td>33.3</td>
<td>26.4</td>
<td>39.5</td>
<td>23.3</td>
<td>61.5</td>
</tr>
<tr>
<td>अगस्त</td>
<td>31.7</td>
<td>25.4</td>
<td>35.8</td>
<td>23.1</td>
<td>74.0</td>
</tr>
<tr>
<td>सितंबर</td>
<td>33.1</td>
<td>24.7</td>
<td>36.3</td>
<td>22.3</td>
<td>64.5</td>
</tr>
<tr>
<td>अक्टूबर</td>
<td>34.5</td>
<td>21.0</td>
<td>37.0</td>
<td>16.7</td>
<td>43.5</td>
</tr>
<tr>
<td>नवम्बर</td>
<td>30.8</td>
<td>14.8</td>
<td>34.1</td>
<td>17.0</td>
<td>40.0</td>
</tr>
<tr>
<td>दिसम्बर</td>
<td>26.7</td>
<td>11.3</td>
<td>30.6</td>
<td>7.9</td>
<td>48.0</td>
</tr>
<tr>
<td>कुल औसत</td>
<td>33.3</td>
<td>20.8</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>44.5</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्रोत: — सिक्किम रेडियो स्टेशन, बूदी एवं कोटा।
गृहावरून -

(अ) काळी मिठी -

इत्यादी विस्तृत दक्षिण-पश्चिम उप-पूर्व की ओर एक पैटी के रूप में पर्वतीय क्षेत्रों में मिलता है। इस मिठी का निर्माण वेसाल्ट ट्रेंग से हुआ है। रंग गहरे कल्पने से लेकर गहरा पीला तथा गांवाई 50 सेमी से कम है।

(आ) मध्यम काळी मिठी -

जिले के दक्षिण-पश्चिम भाग में विस्तृत है। वेसाल्ट, धार्मिक, शिलाल, ग्रेनाइट, नीस आदि चट्टानों के विघटन से निर्माण हुआ है। रंग काला होता है, गांवाई 50 से 100 सेमी तक है।

(इ) गहरी काळी मिठी -

जिले के दक्षिण तथा दक्षिण-पूर्वी हिस्सों में घमंड नदी के किनारे विस्तृत है। अत्यधिक उपजाऊ व नमी धारण करने वाली काळी मिठी की गांवाई बूढ़ी जिले में 100 से 800 सेमी तक है।

(ई) मिश्रित लाल-काळी मिठी -

यह मात्रा वटार की काळी मिठी का हिस्सा है। लाल मिठी ग्रेनाइट व नीस चट्टानों से निर्मित है। इसमें फास्फेट, नाइट्रोजन, कॅल्शियम और कार्बनिक पदार्थों की कमी होती है। इसकी गांवाई 50 से 100 सेमी तक रहती है।

(उ) कॉप मिठी (दोमट) -

नदियां द्वारा निर्मित हल्के भूरे व पीले रंग की इन मिठियों की गांवाई 300 सेमी से अधिक रहती है। इसमें नाइट्रोजन, फास्फोरस व वनस्पति अंशों की कमी है परंतु पोटास्य एवं चूना प्रमाण पर्याप्त मात्राओं में मिलता है। (FIG.8)
वनस्पति :-

बुधदी जिले में वर्ष 2013 के अनुसार लगभग 143503.19 हेक्टेयर भू-भाग पर वन बाये जाते हैं। जो जिले के कुल क्षेत्रफल का लगभग 24.53 प्रतिशत है। इसमें 58898.48 हेक्टेयर पर आर्थिक वन, 61184.19 हेक्टेयर पर सार्क्षिक वन व 1198.52 हेक्टेयर क्षेत्र पर अवर्गीकृत वन बाये जाते हैं। राज्य के अध्यारोपण में 22222 हेक्टेयर में वन बाये जाते हैं। तहसीलवार वन क्षेत्र की स्थिति तालिका 2.5 से स्पष्ट है। (FIG.9)

तहसीलवार वन क्षेत्र स्थिति सारणी 2.6 से स्पष्ट की गई है। जिले में धीकंठा और खेजरों का वाय जाता है। इसके अलावा बबुल, बेरी, साल, तेनदू, खिसर्गी और खेजरों यहां मिलने वाले अन्य कृष्ट हैं। जिले में कृष्टों की 92 प्रजातियां, 31 प्रकार की झाडियां व पोथे व 12 प्रकार की बेलवों और 22 प्रजातियों की चार्स तथा विशेष प्रकार के बृक्ष कुछ पाये जाते हैं।

जिले के क्षेत्रों को 8 वृत्तों में विभाजित किया है। तालिका 2.5 से स्पष्ट है कि सार्क्षिक वन क्षेत्र डाबी-धनेश्वर के अन्तर्गत 403.06 वर्ग किमी है। सार्क्षिक आर्थिक वन क्षेत्र 321.89 वर्ग किमी भी इसी वृत्त में है। सबसे कम चार्स क्षेत्र अशोराय भाग में जो कुल क्षेत्र में मात्र 50.75 वर्ग किमी है, जो सार्क्षिक एवं अवर्गीकृत है।

वानस्पतिक प्रकार :-

बुधदी जिले में निम्न वानस्पतिक प्रकार आ.सी.एम.भाषुर ने विश्लेषित किये हैं :-

1. धीकंठा सीरीज
2. परशुगोमित धीकंठा सीरीज
3. धावकंठा सीरीज
4. सालर -गोदल सीरीज
5. अरुलजं-कृं जीरीज
6. धास के मैदान।

33
### सारणी - 2.6

बूंदी जिले में तहसीलवार कन क्षेत्र (वर्ग किमी)

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्र. स.</th>
<th>तहसील</th>
<th>कुल क्षेत्र (वर्ग किमी)</th>
<th>क्षेत्र (प्रतिशत)</th>
<th>वन क्षेत्र (वर्ग किमी)</th>
<th>क्षेत्र (प्रतिशत)</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>बूंदी</td>
<td>1922.27</td>
<td>33.03</td>
<td>615.01</td>
<td>43.36</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>केपपाटन</td>
<td>706.03</td>
<td>12.13</td>
<td>46.33</td>
<td>3.26</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>इंद्रगढ़</td>
<td>660.65</td>
<td>11.35</td>
<td>98.41</td>
<td>6.93</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>नैनवां</td>
<td>1189.95</td>
<td>20.44</td>
<td>216.1</td>
<td>15.23</td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>हिण्डोली</td>
<td>1340.38</td>
<td>23.03</td>
<td>442.3</td>
<td>31.18</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्रोत: — भू अभिलेख कार्यालय, जिला बूंदी।

#### बूंदी जिले में तहसीलवार कन क्षेत्र

(आरेख 2.3)
जीव-जन्तुः :

बूढ़ी के जंगलों में विभिन्न प्रकार के जीव पाये जाते हैं :

Black Bears
Planters
Black buck (Antilope bezoortica)
Chinkara (Antilope arabica)
Nilgai or blue bull (Antilope tragocamelus) and
Sambhar (Cervus hippocaphus)

वन्यजीव प्रतिष्ठालय : जिले में दो वन्य जीव अभयारण्य हैं :

1. राष्ट्रीय चम्बल अभयारण्य — मगर व घड़ियाल के संकर्षन हेतु चम्बल नदी उपमुक्त जल स्वरूप है। 7 दिसंबर, 1974 में 280 वर्ग किमी क्षेत्र में नदी के दोनों ओर 100 मीटर की चौड़ाई तक यह अभयारण्य बनाया गया है।

2. रामगढ़ विभागीय अभयारण्य — बूढ़ी से 25 किमी दूर राज्य सरकार ने 307 वर्ग किमी क्षेत्र को 5 फरवरी, 1983 को अभयारण्य घोषित किया। इससे पूर्व 19 जनवरी, 1980 में इसे निषिद्ध क्षेत्र का दर्जा प्राप्त था।

3. कनक सागर निषिद्ध क्षेत्र — राज्य सरकार ने 8 वर्ग किमी क्षेत्र में कलेक्टर कनकसागर को शिकार निषिद्ध क्षेत्र घोषित किया है (31.05.1984)।

भूमि उपयोग : किसी भी क्षेत्र के भूमि संसाधन मानव जीवन की आर्थिक—क्रियाओं व उपयोग की प्रारंभिक इकाई मानी जाती है। मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उसके रक्षण में परिवर्तन कर देता है। भूमि उपयोग से तात्विक-भूमि की क्षमता का मूल्यांकन उपयोगों के संदर्भ में किया जाता है। जिस कार्य के लिए भूमि का उपयोग किया जाता है अथवा किया जाना है, उसे 'भूमि उपयोग' कहते हैं।

बूढ़ी में कुल प्रतिवर्षित क्षेत्रफल 581938 हेक्टेयर का भूमि उपयोग तालिक 2.7 एवं आरेख 2.4 से संपत्त है कि जिसमें कृषि के लिए 262669 हेक्टेयर सावधानी बोध गया क्षेत्रफल 2012-13 में था। सिंचाई के साधन होने के कारण एक बार से भी अधिक क्षेत्रफल बो दिया जाता है; इस प्रकार एक
### सारणी- 2.7

#### बूंदी जिले में भूमि उपयोग प्रारूप (वर्ष 2012–13)

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्र.सं.</th>
<th>भूमि उपयोग</th>
<th>क्षेत्र (हेक्टेयर)</th>
<th>प्रतिशत</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>वन क्षेत्र</td>
<td>143637</td>
<td>24.68</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>कृषि हेतु अनुपलब्ध भूमि</td>
<td>88807</td>
<td>15.26</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>स्थाई चारसागार एवं अन्य गौचर भूमि</td>
<td>24635</td>
<td>4.23</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>कृषि अयोग्य भूमि (पड़त)</td>
<td>34062</td>
<td>5.85</td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>वास्तविक बोया गया क्षेत्रकल</td>
<td>262669</td>
<td>45.14</td>
</tr>
<tr>
<td>6.</td>
<td>कुल भौगोलिक क्षेत्रकल</td>
<td>581938</td>
<td>100</td>
</tr>
<tr>
<td>7.</td>
<td>एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्रकल</td>
<td>198696</td>
<td>75.64</td>
</tr>
<tr>
<td>8.</td>
<td>समस्त बोया गया क्षेत्रकल</td>
<td>461365</td>
<td>79.28</td>
</tr>
</tbody>
</table>

#### बूंदी जिले में भूमि उपयोग प्रारूप 2012–13

(आकर्ष 2.4)
बार से अधिक बोया गया क्षेत्र 2012-13 वर्ष में 198696 हैक्टेयर था। अतः समस्त बोया गया क्षेत्रफल 461365 हैक्टेयर हुआ। वास्तविक बोये गये क्षेत्रफल के अनुसार कृषि कार्य हेतु 45.14 प्रतिशत क्षेत्र उपलब्ध था। जबकि बरोबर के लिए 24.68 प्रतिशत उपलब्ध था। गैर कृषि कार्य हेतु उपलब्ध मूल्य में पहाड़ियाँ, पठार, आवादी क्षेत्र, कुँड़े, तालाब, सज्जक, नहर, स्थायी, चारागाह के अन्तर्गत आने वाले क्षेत्र शामिल हैं।

आध्यात्मिक आधार:

कृषि —

जिले का क्षेत्र काफी उपजाता है। जिले के उत्तरी-पश्चिमी तथा दक्षिण-पूर्वी भाग में काली चिकनी मिली है। वर्षा का औसत 724.1 मिली। रहता है, वर्ष 2012-13 में सामान्य वर्षा की अपेक्षा कम वर्षा 598.3 मिली। हुई। राज्य सरकार द्वारा चम्बल के पानी के सिसाई के अंतर्गत उपयोग के लिए कोटा-बून्दी तथा बांसी जिलों के लिए एक विकास एजेंसी बनाई है, जो कमांड एजेंसी डेवलपमेंट (C.A.D.) के नाम से जानी जाती है।

कृषि की दृष्टि से जिले को दो क्षेत्रों में सीएडी व नॉन सीएडी क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। बून्दी व बंकुशान भाग तथा बांसी क्षेत्र में हैं जहां मुख्य बांसी नहर के द्वारा सिसाई का साधारण उपलब्ध है। हिंडोली व नॉनली नॉन-सीएडी क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं। सिसाई की सुरक्षा 47.65 प्रतिशत क्षेत्र में उपलब्ध होने के कारण कई प्रकार की फसलें होती हैं। (FIG.10)

सहाकारी कृषि — बंजर भूमि सुधार के लिए समय पर कई कार्यक्रम बनाये गये। जिले की कुल भूमि का 10.2 प्रतिशत भाग बंजर है जिसे कृषि योग्य बनाया गया। बंजर भूमि विकास के लिए भूमीस्नान को भूमि का आवंटन कर सहकारी आधार पर कृषि प्रारंभ करना था। ऐसा प्रयास दिनांक 10 जनवरी, 1950 को बंगाली बेटेर फार्मिंग सहकारी समिति के गठन से हुआ। समिति की
सदस्यता 23 थी, हिस्सा राशि 575 फै. थी इसे 34446 हु. व 6809 फै. का ऋण दिया गया था। लेकिन यह प्रयोग असफल रहा।

सारणी 2.8 के अवलोकन से पता चलता है कि वार्षिक बोया गया क्षेत्रफल लगतार बढ़ रहा है। सिंचाई हेतु उपयोगी पम्प सेट 21985 है। जोत का औसत आकार 2 हेक्टेयर है। सारणी 2.9 में जिले की प्रमुख फसलें का क्षेत्रफल एवं उत्पादन 2012–13 दर्शाया गया है, उत्पादन में लगतार वृद्धि हो रही है।

### सारणी 2.8

वृद्धि जिले में कृषि 2012–13

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्रम.</th>
<th>मद</th>
<th>इकाई</th>
<th>लिवरण</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1</td>
<td>कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल</td>
<td>हेक्टेयर</td>
<td>581938</td>
</tr>
<tr>
<td>2</td>
<td>वन क्षेत्र</td>
<td>हेक्टेयर</td>
<td>143637</td>
</tr>
<tr>
<td>3</td>
<td>कृपी हेतु अनुपलब्ध भूमि</td>
<td>हेक्टेयर</td>
<td>88807</td>
</tr>
<tr>
<td>4</td>
<td>स्थाई वासागार एवं अन्य गाँवर भूमि</td>
<td>हेक्टेयर</td>
<td>24635</td>
</tr>
<tr>
<td>5</td>
<td>कृपी के झुण्ड एवं बाग</td>
<td>हेक्टेयर</td>
<td>196</td>
</tr>
<tr>
<td>6</td>
<td>कृपी अयोग्य भूमि (पड़ता)</td>
<td>हेक्टेयर</td>
<td>34062</td>
</tr>
<tr>
<td>7</td>
<td>वार्षिक बोया गया क्षेत्रफल</td>
<td>हेक्टेयर</td>
<td>262669</td>
</tr>
<tr>
<td>8</td>
<td>एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्रफल</td>
<td>हेक्टेयर</td>
<td>198696</td>
</tr>
<tr>
<td>9</td>
<td>समस्त बोया गया क्षेत्रफल</td>
<td>हेक्टेयर</td>
<td>461365</td>
</tr>
<tr>
<td>10</td>
<td>सिंचाई हेतु उपयोगी पम्प सेट</td>
<td>संख्या</td>
<td>21985</td>
</tr>
<tr>
<td>11</td>
<td>सामान्य मद</td>
<td>मि.मि.</td>
<td>724.1</td>
</tr>
<tr>
<td>12</td>
<td>वार्षिक मद</td>
<td>मि.मि.</td>
<td>598.3</td>
</tr>
<tr>
<td>13</td>
<td>जोत का औसत आकार</td>
<td>हेक्टेयर</td>
<td>2.00</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्रोत :- सारियकी विभाग, बूढी।

पशुपालन :- जिले में सन् 2007 की पशु गणना के समय पशुओं की संख्या 10,52,311 जो जनसंख्या का 94.73 प्रतिशत थी। सर्वधिक संख्या बकरियों की 389245 क्रमशः द्वितीय, तृतीय रूप से पैस एवं बैंकों (280984) एवं गाय एवं बैंल (273993) है। इसमें कुल कुकटों की संख्या 28659 है। सबसे ज्यादा पशु बूढी तहसील में एवं सबसे कम पशु समपदा इन्द्रगढ़ तहसील
में है। (सारणी 2.10) 2003 की गणना की अवधारणा दुःख शताब्दी पशुओं गाय, बैंस, वक्रियों की संख्या में वृद्धि हुई है, जबकि कुक्कर, ऊट, कुत्ते, बेड की संख्या में कमी आयी है।

मछली पालन :- जिले में मछली पालन भी एक व्यवसाय है, बेलुंगेर, मियल, कालवागु, महसीर, केंट, फिरोज, लवी, सिगाड़ा, समबल, पलोतवाम, बॉटा, कुटी, सरसों किस्म की मछलियों का उत्पादन होता है। इन मछलियों को विशेषकर दिल्ली की मछियों में भेजा जाता है। तालाबों व नदियों में मछली एकड़ने का ढेका प्रति वर्ष नीलामी द्वारा दिया जाता है।

सारणी 2.9
जिले में प्रमुख फसलों का क्षेत्रफल एवं उत्पादन 2012–13

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्रंस.</th>
<th>फसल</th>
<th>क्षेत्रफल (हेक्टर)</th>
<th>उत्पादन (मेट्रिक टन)</th>
<th>औसत उत्पादन (किग्रा प्रति हेक्टर)</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1</td>
<td>चावल</td>
<td>19312</td>
<td>38624</td>
<td>2000</td>
</tr>
<tr>
<td>2</td>
<td>ज्वार</td>
<td>99</td>
<td>93</td>
<td>939</td>
</tr>
<tr>
<td>3</td>
<td>गेहूं</td>
<td>154109</td>
<td>434240</td>
<td>2818</td>
</tr>
<tr>
<td>4</td>
<td>मक्का</td>
<td>42612</td>
<td>76430</td>
<td>1794</td>
</tr>
<tr>
<td>5</td>
<td>खड़द</td>
<td>40749</td>
<td>22816</td>
<td>560</td>
</tr>
<tr>
<td>6</td>
<td>चना</td>
<td>5190</td>
<td>4901</td>
<td>944</td>
</tr>
<tr>
<td>7</td>
<td>गन्ना</td>
<td>1261</td>
<td>19451</td>
<td>15425</td>
</tr>
<tr>
<td>8</td>
<td>मूंगफली</td>
<td>486</td>
<td>486</td>
<td>1000</td>
</tr>
<tr>
<td>9</td>
<td>तिल</td>
<td>12314</td>
<td>9062</td>
<td>736</td>
</tr>
<tr>
<td>10</td>
<td>राई सरसों</td>
<td>66967</td>
<td>83421</td>
<td>1246</td>
</tr>
<tr>
<td>11</td>
<td>सोयाॉबीन</td>
<td>88874</td>
<td>147453</td>
<td>1663</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्रोत :- सारणीकी विभाग, बुंदी।
### सारणी 2.10

**पशु पालन (पशु गणना 2007)**

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्रमं</th>
<th>मद</th>
<th>इकाई</th>
<th>विवरण</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1</td>
<td>पशु चिकित्सालय</td>
<td>संख्या</td>
<td>28</td>
</tr>
<tr>
<td>2</td>
<td>पशु औषधालय</td>
<td>संख्या</td>
<td>5</td>
</tr>
<tr>
<td>3</td>
<td>पशु स्कन्ध एवं कुकुट :—</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>i</td>
<td>कुल पशु स्कन्ध एवं कुकुट</td>
<td>संख्या</td>
<td>1052311</td>
</tr>
<tr>
<td>ii</td>
<td>गाय एवं बैल</td>
<td>संख्या</td>
<td>273693</td>
</tr>
<tr>
<td>iii</td>
<td>मैौस एवं मैौसे</td>
<td>संख्या</td>
<td>280984</td>
</tr>
<tr>
<td>iv</td>
<td>सुअर</td>
<td>संख्या</td>
<td>7369</td>
</tr>
<tr>
<td>v</td>
<td>ऊँट</td>
<td>संख्या</td>
<td>2188</td>
</tr>
<tr>
<td>vi</td>
<td>मेड़</td>
<td>संख्या</td>
<td>59026</td>
</tr>
<tr>
<td>vii</td>
<td>वकरियां</td>
<td>संख्या</td>
<td>369245</td>
</tr>
<tr>
<td>viii</td>
<td>घोड़े एवं टद्दे</td>
<td>संख्या</td>
<td>898</td>
</tr>
<tr>
<td>ix</td>
<td>कुत्ते</td>
<td>संख्या</td>
<td>28566</td>
</tr>
<tr>
<td>x</td>
<td>गधे</td>
<td>संख्या</td>
<td>1638</td>
</tr>
<tr>
<td>xi</td>
<td>अन्य</td>
<td>संख्या</td>
<td>45</td>
</tr>
<tr>
<td>xii</td>
<td>कुल कुकुट</td>
<td>संख्या</td>
<td>28659</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्त्रोत :— सामूहिक विभाग, बूढी।

उद्योग :—

बिजली, यातायात तथा अन्य साधनों की ऑस्पति उपलब्धता होने के बावजूद औद्योगिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ है। इसका एक कारण बूढी के निकट कोटा का राज्यक्षेत्र की औद्योगिक राजधानी के रूप में विकसित होना भी है। इस जिले के वर्तमान बड़ी औद्योगिक इकाई लाखांद्र की एसोसिएटेड सीमेंट कम्पनी है। यह देश की सबसे बड़ी कम्पनियों में से एक है। कपड़े बुनना,
जिले में घरेलू मजदूर संगठन है। इस सब में लाखों सीमेंट कामगार संघ स्वच्छता संगठन है। अधिकतर संघ गूढ़ी में है और स्रोतों इकाइयों का आकार छोटा होने के कारण ये बहुधा निष्क्रिय ही रहते हैं। वर्तमान समय में जिले में 146 पंजीकृत उद्योगों में 2435 श्रमिक कार्यक्त हैं जिसमें 230 लघु उद्योग एवं 230 मध्यम उद्योगों में कार्यक्तकार्य की संख्या 937 है। वृहद एवं महत्वपूर्ण उद्योग 5 हैं, जिसमें कार्यक्तकार्य की संख्या 1258 है। जिले में 6 स्रोतों के क्षेत्र पाये जाते हैं। (सारणी 2.11)

### सारणी 2.11

#### उद्योग 2012–13

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्रम</th>
<th>मद</th>
<th>इकाई</th>
<th>विभाग</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1</td>
<td>पैंडुल मक्खनी अंतर्गत पंजीकृत उद्योग</td>
<td>संख्या</td>
<td>146</td>
</tr>
<tr>
<td>2</td>
<td>पंजीकृत उद्योगों में कार्यक्त श्रमिक</td>
<td>संख्या</td>
<td>2435</td>
</tr>
<tr>
<td>3</td>
<td>उद्योग विभाग के अंतर्गत पंजीकृत लघु उद्योग</td>
<td>संख्या</td>
<td>230</td>
</tr>
<tr>
<td>4</td>
<td>लघु उद्योगों में कार्यक्त श्रमिक</td>
<td>संख्या</td>
<td>937</td>
</tr>
<tr>
<td>5</td>
<td>वृहद एवं मध्यम उद्योग</td>
<td>संख्या</td>
<td>05</td>
</tr>
<tr>
<td>6</td>
<td>वृहद एवं मध्यम उद्योगों में कार्यक्त श्रमिक</td>
<td>संख्या</td>
<td>1258</td>
</tr>
<tr>
<td>7</td>
<td>औद्योगिक श्रेणी</td>
<td>संख्या</td>
<td>06</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्रोत: सारणी की विभाग, गूढ़ी।

जिले में खनिज पदार्थों का उत्पादन एवं विक्री मूल्य वर्ष 2011–12 में प्रमाण खनेज तथा अन्य प्रायदन खनिज के रूप में सारणी 2.12 द्वारा ओंकड़े प्रदर्शित है। (सारणी 2.12) एवं (FIG.12)।
(FIG. 12)
औद्योगिक संभावनाएं — तेल मिल, दाल मिल, स्ट्राइमर्स, चावल उद्योग, मिनी सीमेंट प्लांट, सितिका आधारित उद्योग, पर्यावरण की गिडी, उद्योग का फर्नीचर, बीडी निर्माण, मसालों की चयनित, कृषि उद्योग औजार आदि के विकास की काफी संभावनाएं हैं क्योंकि तेल मिल व चावल मिल के लिए कच्चा माल जिसे मै ही आगे ल्याने की तैयारी है और यातायात साधनों मै र.112 एवं पश्चिमी रेलवे की बड़ी रेल लाइन से जुड़ा हुआ है।

### सारणी— 2.12
### खजिज पदार्थों का उत्पादन एवं विकी मूल्य 2011–12

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्रम.</th>
<th>खजिज पदार्थों का नाम</th>
<th>उत्पादन (टन में)</th>
<th>विकी मूल्य (लाख रु.)</th>
<th>ओळके रेलगार प्राति प्रतिदिन (संख्या)</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>(अ) प्रधान खजिज</td>
<td></td>
<td></td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>1. चायना कले</td>
<td>8694</td>
<td>17.38</td>
<td>10</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>2. लाईम स्टोन</td>
<td>802917</td>
<td>1364.95</td>
<td>72</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>3. सितिका सौण्ड</td>
<td>99235</td>
<td>396.94</td>
<td>164</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>(ब) अग्रधान खजिज</td>
<td></td>
<td></td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>1. सौण्ड स्टोन</td>
<td>2439435</td>
<td>14638.59</td>
<td>11841</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>2. स्लेट स्टोन</td>
<td>375</td>
<td>1.69</td>
<td>4</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>3. गैज्नरी स्टोन</td>
<td>839533</td>
<td>970.80</td>
<td>280</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>4. लाईम स्टोन</td>
<td>301973</td>
<td>276.99</td>
<td>316</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>5. मार्कल</td>
<td>5700</td>
<td>7.13</td>
<td>95</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>6. कंकर-वज्री</td>
<td>63613</td>
<td>63.31</td>
<td>-</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>7. युर्भम</td>
<td>3073</td>
<td>3.07</td>
<td>-</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>8. फल्चर अर्थ</td>
<td>1350</td>
<td>68</td>
<td>15</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>9. मिट्टी</td>
<td>53266</td>
<td>15.98</td>
<td>-</td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्रोत — सार्वजनिक विभाग, बूटी।
परिवहन एवं संचार साधन :

किसी भी क्षेत्र के विकास के लिए परिवहन एवं संचार साधनों का अत्यधिक महत्व है, क्षेत्र का आर्थिक विकास पूर्णतः इसी पर निर्भर करता है। प्रमुखतया पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण बूढ़ी जिले में परिवहन और संचार सुविधाओं का अभाव है अर्थात वे इस स्थिति की सुविधाएं नहीं हैं, जो अन्य जिलों में उपलब्ध है पक्की सड़कें बन जाने के कारण कुछ वर्षों में मोटर परिवहन ने तेजी से प्रगति की है। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना एवं ग्रामीण क्षेत्रों में राज्य परिवहन निगम की ओर से शुरू की ग्रामीण सरकारी बसें द्वारा गाँवों की पहुँच नगरों से जुड़ी है। लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में परिवहन का भुग्ग अनुभव त्रैक्टर-ड्रॉली ही है। (सारणी 2.13)

बूढ़ी जिले में सड़कें की लम्बाई 2385.55 कि.मी. है, जिसमें राष्ट्रीय राजमार्ग 204 कि.मी. तथा अन्य सड़कें 2181.55 कि.मी. है। कुल आबादी गाँव 881 में से 641 गाँव सड़कों से जुड़े हुए हैं।

जिले के समस्त कॉलोर सड़क मार्ग से जुड़े हुए हैं। कुछ मार्ग जो महत्त्वपूर्ण हैं वह इस प्रकार है। (FIG.13)

सड़क यातायात :-

1. राष्ट्रीय राजमार्ग— जयपुर से गोपाल होकर जबलपुर जाने वाला N.H.12 ठोक, देवली, बूढ़ी और कोटा होकर गुजरता है। यह राष्ट्रीय मार्ग बूढ़ी क्षेत्र में 64 कि.मी. की लम्बाई लिए हुए हैं जो जिले के मुख्यालय बूढ़ी से देवली की तरफ 40 कि.मी. और कोटा की तरफ 24 कि.मी।। यह हिंडोली—बूढ़ी—तालेज़ा होकर गुजरता है, अब यह N.H. चार लेन में परिवर्तित किया जा चुका है।

2. बूढ़ी—चित्तोड़ राज्य राजमार्ग (S.H.29) — कोटा से चित्तोड़ जाने वाले राजमार्ग बूढ़ी होकर गुजरता है इसकी जिले में लम्बाई बूढ़ी से
भीलवाड़ा जिले की तरफ 30.48 किमी. है। कोटा, उदयपुर जाने वाली बसें इस रास्ते से होकर गुजरती है।

3. उनियारा–इंद्रगढ–आगरा रास्ता— इसकी जिले में लम्बाई 13 किमी. है।

4. बूढ़ी–लाखेवी–सवाई माधोपुर की लम्बाई जिले में 90 किमी. है।

5. मैंसरोड़–कोटा, कैशोरायपाटन, कापरेन, लबान, लाखेवी जिले में इसकी लम्बाई 73 किमी. है।

6. टोक–नगर–नैनवां, खटकड़, कैशोरायपाटन इसकी जिले में लम्बाई 73 किमी. है।

जिला सड़कें —

(1) ताजेढ़ा–कैशोरायपाटन (2) नैनवां–झाज्हार (3) कोटा डे म रोड (जवाहर सागर डे म) (4) बसह–अल्फा नगर (5) बूढ़ी–दबलाना (6) बूढ़ी–सिलोर–नमाना–गजज्झा, डाढ़ी–थनेश्वर (7) नमाना–हरीपुर–रायमु (8) बूढ़ी–नैनवां– 67.38 किमी. लम्बी सड़क है।

रेल यातायात —

बूढ़ी जिला पश्चिमी मध्य रेलवे की बड़ी लाइन से जुड़ा है।
कोटा–सवाई माधोपुर को जोड़ने वाली रेल लाइन गुड़ला, कैशोराय पाटन, अरनेठा, कापरेन, घाट का वराना, लबान, लाखेवी और इंद्रगढ़ व झुमेसांज मण्डी स्टेशन्स से होकर गुजरती है (FIG.13)। यह रेलवे लाइन "ग्रेट हिंडिया विनसनसिता रेलवे सिस्टम" के अन्तर्गत 01.05.1909 को यातायात के लिए प्रारम्भ की गई।

इस रेलवे लाइन का मुख्य लाखेवी के एसोसियेटेड सीमेंट कंपनी (ACC) के लाखेवी सीमेंट वर्क्स को मिला है।

2. रामपाण्डे, रेल्वे इन सज्जनताना, पृ.181.
रेल मार्ग :—

(i) ग्रेड इण्डिया पेननसुला रेलवे सिस्टम लाइन — Kota- S.Madhopur Bundi में 72 किमी।

(ii) कोटा—थिरौड़—नीमच— जिले में 48 किमी।

इस रेलवे लाइन पर जम्मू-काश्मीर, कन्याकुमारी, आगर, मुंबई, दिल्ली के बीच चलने वाले व्यस्त यातायात की गड्ढीयाँ चलती है। बूढ़ी जिले से गुजरने वाली इस रेलवे लाइन की जिलों में लम्बाई 72 किमी है।

दूसरी रेलवे लाइन कोटा से थिरौड़ और नीमच के मध्य वर्ष 1988—90 से प्रारम्भ हुई रेलवे लाइन है। इस रेलवे लाइन पर मुंबई, देहरादून, तालेज़ा, कोतिया, बूढ़ी और शीर्षागर (महाराष्ट्र का निवास) रेलवे स्टेशन हैं। इस रेलवे लाइन की लम्बाई जिलों में श्री नगर रेलवे स्टेशन तक 48 किमी है।

संचार :—

आधुनिक वैश्विक रेल में 'कम्प्यूटर युग' में संचार के माध्यमों डाकघर, लेटर बॉक्स, पंचायत संचार सेवा केन्द्र, एस.डी.ई/पी.सी.ओ, दूरभाष, टी.वी., रेडियो भी पुराने लगने लगे हैं। अत्याधुनिक 3-G व 4-G सेवाओं एवं प्रत्येक नागरिकों के पास पहुँचती गतिविधियों ने संचार में क्रांति ला दी है। बूढ़ी जिले में 175 डाकघर, 594 लेटर बॉक्स, STD/ PCO की संख्या 405 है।

दूरभाष कनेक्शन 8045 है जिसमें से 2458 ग्रामीण व 5587 कनेक्शन शहरी हैं।
(सारणी 2.13)

जनानिकी आधार :—

किसी भी क्षेत्र में विकास में जनसंख्या तथा उसके द्वारा किये जाने वाले कार्य महत्वपूर्ण हैं। मानव के प्रयास, वुद्धिवृद्धि, विकासव्रूढ़ि आदि प्रयासों से ही प्राकृतिक सम्पदा का सदृश्योग सम्पन्न होता है। प्राकृतिक संसाधनों के उत्पादक, उपभोक्ता तथा संरक्षित के निर्माण के रूप में मानव एक प्रमुख संसाधन है।
## सारणी- 2.13
### ग्रामस्थ एवं साँवर 2012-13

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्रम.</th>
<th>विभाग</th>
<th>इकाई</th>
<th>विवरण</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1</td>
<td>डाकघर</td>
<td>संख्या</td>
<td>175</td>
</tr>
<tr>
<td>2</td>
<td>लेटर बाक्स</td>
<td>संख्या</td>
<td>594</td>
</tr>
<tr>
<td>3</td>
<td>पंचायत संचार सेवा केन्द्र</td>
<td>संख्या</td>
<td>839</td>
</tr>
<tr>
<td>4</td>
<td>एस.टी.डी./पी.सी.ओ.</td>
<td>संख्या</td>
<td>405</td>
</tr>
<tr>
<td>5</td>
<td>दूरसंचार कनेक्शन</td>
<td>संख्या</td>
<td>8045</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>a) ग्रामीण</td>
<td>संख्या</td>
<td>2458</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>b) शहरी</td>
<td>संख्या</td>
<td>5587</td>
</tr>
<tr>
<td>6</td>
<td>गोबाइल कनेक्शन</td>
<td>संख्या</td>
<td>87483</td>
</tr>
<tr>
<td>7</td>
<td>मोटर वाहनों का पंजीकरण</td>
<td>संख्या</td>
<td>147666</td>
</tr>
<tr>
<td>8</td>
<td>सड़कों की लंबाई</td>
<td>कि.मी.</td>
<td>2385.55</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>i) र.राजमार्ग</td>
<td>कि.मी.</td>
<td>204.00</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>ii) अन्य सड़कें</td>
<td>कि.मी.</td>
<td>2181.55</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>iii) सड़कों से जुड़े गाओं की रंग</td>
<td>संख्या</td>
<td>641</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्रोत : सारिखाकी विभाग, बूढ़दी।

जन्मांगिकी संसर्गना के अन्तर्गत जनसंख्या विद्वान, जनसंख्या की प्रजापति, जनन, मृत्युर, लिंगानुपात, जनसंख्या वांछन, आयु, संसर्गना, धर्म, भाषा, साक्षरता, व्यावसायिक संसर्गना, पारिवारिक संसर्गना, वैश्विक स्तिथि आदि गुणों का अध्ययन किया जाता है। अतः क्षेत्र के प्राकृतिक संसाधनों एवं जनसंख्या के बीच संचालन संबंधों आवश्यक है।

बूढ़दी जिले का क्षेत्रफल 5850.50 कर्ग कि.मी. (क्षेत्र 5685.45 ग्रामीण व 165.05 शहरी) है। यह राजस्थान के कुल मौग्गलिक क्षेत्रफल का 1.70 प्रतिशत है। बूढ़दी जिले में 880 आबाद ग्राम एवं 6 नगरों में 2011 की जनगणना के अनुसार 11,10,906 आबादी है, जो राजस्थान की कुल जनसंख्या का 1.62 प्रतिशत है। जिसमें 577160 पुरुष, 533746 महिलाएं हैं। कुल जनसंख्या में 0-6 वर्ष की आयु की संख्या 159884 है, जिसमें 84431 लड़के तथा 75453 लड़कियाँ हैं।
जनसंख्या वितरण :-
बूंदी जिले में जनसंख्या वितरण असमान है। सर्वाधिक स्थान जनसंख्या बूंदी, केशोराय पाटन, टालेजा, इण्डगढ़ तहसीलों में मिलती है। उबड़-खबड़, पठारी व जलामाय वाले क्षेत्र के हिङ्गोली एवं नैनवां में विस्तर जनसंख्या बढ़ी जाती है। जनसंख्या का अधिक जमाव उपजाऊ मैदानी क्षेत्र, परिवहन केन्द्रों के आस-पास हुआ है।

तालिका 2.14 व 2.15 एवं आरेख 2.5 से स्पष्ट है कि बूंदी जिले की कुल जनसंख्या 1110906 है जिसमें से 888205 ग्रामीण व 222701 जनसंख्या नगरीय है। सर्वाधिक जनसंख्या बूंदी तहसील में 251296 (22.62%) तथा उसके आगे कम इण्डगढ़ तहसील में 127715 (11.45%) थी। जिले में ग्रामीण व नगरीकरण का प्रतिशत क्रमशः 79.95 प्रतिशत व 20.05 प्रतिशत है।

ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या :-
ग्रामीण— बूंदी जिले में 2011 की जनगणना के अनुसार 888205 (79.95 प्रतिशत) लोग ग्रामीण थे, जिनमे 461734 पुरुष तथा 426471 महिलाएं थीं। (तालिका 2.15 एवं आरेख 2.6)

2011 की जनगणना के समय जिले के कुल 880 गाँवों में जनसंख्या वाली पायी जाती है, शेष 10 गाँव गैर-आवाद थे। गाँव एक—दूसरे से भिन्न हैं तथा उनमें केंद्रीय व जनसंख्या अध्याय पर अन्तर पाया जाता है। सर्वाधिक राजस्थान गैनवां, हिङ्गोली तहसीलों में क्रमशः 190 व 186 राजस्थान गांव हैं। जबकि सबसे कम राजस्थान गांव टालेजा (106), इण्डगढ़ (121) तथा केंप्टान (122) में हैं। बूंदी तहसील में 166 राजस्थान गांव हैं। (तालिका 2.14)

शहरी— नगरीय जनसंख्या में 2011 में 222701 है, जो कुल आबादी का 20.05 प्रतिशत है। जिनमें से 115426 पुरुष तथा 107275 महिलाएं थीं। यह आबादी मुख्यतः 6 नगरों— नैनवां, इण्डगढ़, लाखेशरी, कापेरेन, केन्टान, बूंदी नगरों में निवास करती हैं। अन्य शहर, बुधपुरा, टालेजा, सुभेगंज मण्डल है। (तालिका 2.15 एवं आरेख 2.7)
### सारणी 2.14

**बून्दी जिले में जनसंख्या का तहसीलवार वितरण**

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्रं नं.</th>
<th>तहसील</th>
<th>भूआमिलखा निरीक्षक कृषि पतवार मण्डल</th>
<th>याग पशुपालन</th>
<th>राजरंग ग्राम</th>
<th>जनसंख्या (2011)</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td></td>
<td></td>
<td>पुरुष</td>
<td>स्त्री</td>
<td>योग</td>
<td>पुरुष</td>
</tr>
<tr>
<td>1</td>
<td>बून्दी</td>
<td>5</td>
<td>39</td>
<td>30</td>
<td>166</td>
</tr>
<tr>
<td>2</td>
<td>कं.पाटन</td>
<td>5</td>
<td>38</td>
<td>25</td>
<td>122</td>
</tr>
<tr>
<td>3</td>
<td>नैनपा</td>
<td>7</td>
<td>50</td>
<td>33</td>
<td>190</td>
</tr>
<tr>
<td>4</td>
<td>हिंदोली</td>
<td>6</td>
<td>50</td>
<td>41</td>
<td>186</td>
</tr>
<tr>
<td>5</td>
<td>इंदिरगंज</td>
<td>4</td>
<td>28</td>
<td>21</td>
<td>121</td>
</tr>
<tr>
<td>6</td>
<td>ताइलाड़ा</td>
<td>4</td>
<td>32</td>
<td>31</td>
<td>106</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>योग</td>
<td>31</td>
<td>237</td>
<td>181</td>
<td>891</td>
</tr>
</tbody>
</table>

**स्रोत:** भारत की जनगणना, 2011 (बून्दी).

#### बून्दी जिले में तहसीलवार जनसंख्या वितरण (2011)

- **पुरुष जनसंख्या**
- **महिला जनसंख्या**
- **कुल जनसंख्या**
- **अनु.जाति जनसंख्या**
- **अनु.जनजाति जनसंख्या**

(आरेख 2.5)
### सारणी 2.15

बुढ़दी जिले में ग्रामीण व शहरी जनसंख्या (2011)

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्रम</th>
<th>ग्रामीण</th>
<th>पुरुष</th>
<th>स्त्री</th>
<th>योग</th>
<th>अ.जा.</th>
<th>अ.ज.जा.</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1</td>
<td>हिण्डोली</td>
<td>114242</td>
<td>105726</td>
<td>219968</td>
<td>40293</td>
<td>40557</td>
</tr>
<tr>
<td>2</td>
<td>नैनवा</td>
<td>92236</td>
<td>84349</td>
<td>176585</td>
<td>32216</td>
<td>41142</td>
</tr>
<tr>
<td>3</td>
<td>इंगड़गढ़</td>
<td>45457</td>
<td>41609</td>
<td>87066</td>
<td>14104</td>
<td>29480</td>
</tr>
<tr>
<td>4</td>
<td>क.पटन</td>
<td>56203</td>
<td>52409</td>
<td>108612</td>
<td>22145</td>
<td>28470</td>
</tr>
<tr>
<td>5</td>
<td>बूढ़दी</td>
<td>153596</td>
<td>142378</td>
<td>295974</td>
<td>59559</td>
<td>77356</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>योग ग्रामीण</td>
<td>461734</td>
<td>426471</td>
<td>888205</td>
<td>168317</td>
<td>217005</td>
</tr>
</tbody>
</table>

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्रम</th>
<th>शहरी</th>
<th>पुरुष</th>
<th>स्त्री</th>
<th>योग</th>
<th>अ.जा.</th>
<th>अ.ज.जा.</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1</td>
<td>नैनवा</td>
<td>10998</td>
<td>9387</td>
<td>19485</td>
<td>2645</td>
<td>501</td>
</tr>
<tr>
<td>2</td>
<td>इंगड़गढ़</td>
<td>3901</td>
<td>3543</td>
<td>7444</td>
<td>1732</td>
<td>194</td>
</tr>
<tr>
<td>3</td>
<td>लामेशी</td>
<td>15222</td>
<td>14350</td>
<td>29572</td>
<td>9321</td>
<td>941</td>
</tr>
<tr>
<td>4</td>
<td>कापरन</td>
<td>10758</td>
<td>9990</td>
<td>20748</td>
<td>4057</td>
<td>3478</td>
</tr>
<tr>
<td>5</td>
<td>क.पटन</td>
<td>12703</td>
<td>11924</td>
<td>24627</td>
<td>4767</td>
<td>604</td>
</tr>
<tr>
<td>6</td>
<td>बूढ़दी</td>
<td>54485</td>
<td>50434</td>
<td>104919</td>
<td>15892</td>
<td>4364</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>बुढपुरा (CT)</td>
<td>2654</td>
<td>2416</td>
<td>5070</td>
<td>1407</td>
<td>1003</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>तालेगड़ा (CT)</td>
<td>3724</td>
<td>3479</td>
<td>7203</td>
<td>2169</td>
<td>175</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>सु.समिद्र (CT)</td>
<td>1881</td>
<td>1752</td>
<td>3633</td>
<td>481</td>
<td>284</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>योग शहरी</td>
<td>115426</td>
<td>107275</td>
<td>222701</td>
<td>42471</td>
<td>11544</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>जिला योग</td>
<td>577160</td>
<td>533746</td>
<td>1110908</td>
<td>210788</td>
<td>228549</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्रोत: मास्टर की जनगणना, 2011 (बुढ़दी)

(आरेख 2.6 व 2.7)
जनसंख्या वृद्धि :-

बूढी रियासत के समय जनसंख्या गणना 1881 से प्रारम्भ होने का उल्लेख मिलता है। जनसंख्या 1881 में 254701 तथा 1891 में 295676 थी, लेकिन जनसंख्या की दस वर्षीय वृद्धि के लिए 1901 की जनगणना से गणना प्रारम्भ की गई है।

तालिका संख्या—2.16 एवं आरेख 2.8 से यह स्पष्ट होता है कि 1901 से प्रतिशत अनुपात में जनसंख्या में लगातार वृद्धि हुई है और 2011 में यह प्रतिशत अंतर 1901 की जनसंख्या की तुलना में 520 पर पहुँच गया। 1921 की जनगणना में 14.00 प्रतिशत की गिरावट लक्षित होती है उसका कारण यह है कि 1916 में राजस्थान, तब राजपुत्राना में, भयंकर दुर्गिका पड़ा था जिसका असर (तत्कालीन रियासत) वर्तमान जिले में भी भयंकर रूप में पड़ा था। कुछ लोग काल के गाल में समा गये थे तथा कुछ लोग मालवा की ओर पताका कर गये थे। इसके अतिरिक्त जनसंख्या कमी में इनफलुएंटा, प्लेग और जैसी महामारियों का भी प्रभाव रहा है। 1961—1971 के दशक में सबसे अधिक वृद्धि अंकित की गई एवं 1971 की जनगणना के पश्चात्, जनसंख्या वृद्धि दर कमी आयी है जो 32.42 से घटकर 1981 में 30.83, 1991 में 25.85, 2001 में 24.97 और 2011 में लगभग 10 अरब की गिरावट से 15.40 रह गयी। जिसका कारण सरकारी प्रयास, परिसर कल्याण नियोजन कार्यक्रम, शिश्न प्रसार जैसे जागरूकता होना है।

जनसंख्या घनत्व :-

राजस्थान राज्य में क्षेत्र के अनुपात में बूढी जिले का स्थान 22वाँ है जबकि जनसंख्या घनत्व (2011) में राज्य में उसका स्थान 23वाँ है। जिले का जनसंख्या घनत्व 190 (जनगणना 2011) है तथा राजस्थान राज्य का 200 है।

जिले का जनसंख्या घनत्व 190 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. है परन्तु जिले के शहीद क्षेत्र में काफी अंतर है। ग्रामीण क्षेत्र में जनसंख्या का घनत्व केवल 156 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. है, जबकि शहीद क्षेत्र के लिए 1349 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. है, जो ग्रामीण क्षेत्र के जनसंख्या घनत्व से 9 गुना से कुछ ही कम है। जिले के ग्रामीण क्षेत्र में केंद्रीय ग्राम वाले लोगों की समिति का जन घनत्व
### सारणी- 2.16

बूढ़ी जिले में जनसंख्या वृद्धि (1901–2011)

<table>
<thead>
<tr>
<th>वर्ष</th>
<th>जनसंख्या</th>
<th>पुरुष</th>
<th>स्त्री</th>
<th>दशकीय प्रतिशत</th>
<th>1901 से प्रतिशत में अन्तर</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1901</td>
<td>179256</td>
<td>92862</td>
<td>86387</td>
<td>0</td>
<td>0</td>
</tr>
<tr>
<td>1911</td>
<td>228068</td>
<td>118031</td>
<td>110037</td>
<td>+27.23</td>
<td>+27.23</td>
</tr>
<tr>
<td>1921</td>
<td>196146</td>
<td>102348</td>
<td>93798</td>
<td>-14.00</td>
<td>+9.42</td>
</tr>
<tr>
<td>1931</td>
<td>226482</td>
<td>118156</td>
<td>108326</td>
<td>+15.47</td>
<td>+26.35</td>
</tr>
<tr>
<td>1941</td>
<td>260420</td>
<td>135794</td>
<td>124626</td>
<td>+4.98</td>
<td>+45.28</td>
</tr>
<tr>
<td>1951</td>
<td>292157</td>
<td>152768</td>
<td>139389</td>
<td>+12.19</td>
<td>+62.98</td>
</tr>
<tr>
<td>1961</td>
<td>353267</td>
<td>186383</td>
<td>166884</td>
<td>+20.92</td>
<td>+97.07</td>
</tr>
<tr>
<td>1971</td>
<td>467793</td>
<td>248055</td>
<td>219738</td>
<td>+32.42</td>
<td>+160.96</td>
</tr>
<tr>
<td>1981</td>
<td>612017</td>
<td>324259</td>
<td>287758</td>
<td>+30.82</td>
<td>+241.42</td>
</tr>
<tr>
<td>1991</td>
<td>770248</td>
<td>407826</td>
<td>362422</td>
<td>+25.85</td>
<td>+329.69</td>
</tr>
<tr>
<td>2001</td>
<td>962620</td>
<td>504818</td>
<td>457802</td>
<td>+24.97</td>
<td>+437.00</td>
</tr>
<tr>
<td>2011</td>
<td>110906</td>
<td>577160</td>
<td>533746</td>
<td>+15.40</td>
<td>+519.73</td>
</tr>
</tbody>
</table>

रनोल्‌टः भारत की जनगणना, 2011 (बूढ़ी).

### व्यक्तियों की संख्या

बूढ़ी जिले में जनसंख्या वृद्धि (1901 से 2011)

![Graph showing population growth](image)

(आरेख 2.8)
162 व्यक्ति प्रति वर्ग हैं, जो अधिकतम हैं तथा न्यूनतम जनसंख्या घनत्व 107 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. नैनवा पंचायत समिति का है। शहरी क्षेत्र में बृहदी घनी आबादी घाता है जिसका जनसंख्या घनत्व 4609 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. है तथा कापड़न का जनसंख्या घनत्व 324 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. है जो न्यूनतम है। बृहदी जिले के आबाद गाँवों की जनसंख्या में अन्तर है। 10 गाँव ऐसे हैं जिनका जनसंख्या घनत्व 10 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. का है। 13 गाँव 11 से 20, 87 गाँव 21 से 50, 221 गाँव 51 से 100, 330 गाँव 101 से 200, 115 गाँव 201 से 300, 29 गाँव 301 से 500 तथा केवल 8 गाँव 500 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. में जनसंख्या घनत्व की श्रेणी में आते हैं। तहसीलवार जन घनत्व सारणी 2.17 से स्पष्ट है।

तालिका 2.17 एवं आरेख 2.9 से स्पष्ट है कि उच्चतम जनसंख्या घनत्व के उपजोराय पाटन तहसील में 217 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. हैं, क्योंकि कोपाटन तहसील में जय चम्बल का दोआव श्रेणी हैं, उपजाउल मध्यम काली मिट्टी, अनुकूल मौसमिक दशाओं, चम्बल नदी की नहरें तथा विकसित यातायात उपच जन घनत्व के लिए उत्तरदायी हैं।

मध्यम जन घनत्व बृहदी (क्वालिटार्ड), इंद्रगढ़ तहसीलों में क्रमशः 214 व 193 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. है।

निम्न जन घनत्व (नैनवा 184) तथा हिंदूदेवी (165) व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. में हैं, नदियों का अभाव, अनुपजाउ ध्रुव, पर्यावरणीय साधनों का अभाव तथा उबड़-खाबड़ पड़ोसी क्षेत्र इत्यादि कारणों से निम्न जन घनत्व पाया जाता है। (FIG. 14)

राष्ट्रीय-पुरुष अनुपात —

राष्ट्रीय-पुरुष का अनुपात 2011 की जनगणना के अनुसार कुल 925 रिसेम्यों प्रति हजार पुरुष अंकित हैं। यह अनुपात ग्रामीण जनसंख्या में 924 और नगरीय जनसंख्या में 929 हैं, जो ग्रामीण क्षेत्र से अधिक है। निम्नतालिका (2.18) को देखने से यह प्रतीत होता है कि 1901 से अधिकांश रिसेम्यों की संख्या कम ही
<table>
<thead>
<tr>
<th>तहसील</th>
<th>जनसंख्या घनत्व (वर्ग किमी.)</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>हिण्डोली</td>
<td>165</td>
</tr>
<tr>
<td>नैनवा</td>
<td>164</td>
</tr>
<tr>
<td>इंद्रगढ़</td>
<td>193</td>
</tr>
<tr>
<td>के.पाटन</td>
<td>217</td>
</tr>
<tr>
<td>बूंदी+ तालेज़ा</td>
<td>214</td>
</tr>
<tr>
<td>जिला</td>
<td>200</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्रोत :- भारत की जनगणना, 2011 (बूंदी).

(आरेख 2.9)
होती गर्नी है, लेकिन शिक्षा से बढ़ती जागरूकता, वालिकाओं को मिले समान कार्यवृत्ति अधिकार, कन्या-गृह पर कानून रोक, लिंग-परीक्षण पर रोक के बाद 1991 से लगातार स्त्री-पुरुष अनुपात में वृद्धि हो रही है। (सारणी 2.18)

जिले में तहसील वार एवं ग्रामीण एवं शहरी जनसंख्या के लिंगानुपात का विश्लेषण करने से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्र में सबसे कम लिंगानुपात नैनां तहसील में 916 और शहरी क्षेत्र में सबसे कम इन्दौर में मात्र 908 है। (सारणी 2.19 एवं आरेख 2.10)

बूढ़ी जिले में 0–6 आयु वर्ग में कुल जनसंख्या 159884 है जिसमें 84431 पुरुष एवं महिला 75453 है, जिनका स्त्री-पुरुष अनुपात मात्र 894 वालिकाएं प्रति हजार मात्र वालक हैं, जो जिले के औसत 925 से काफी कम है, यह चिन्तनीय विषय है इस पर समय रखते जागरूकता से बढ़ोतरी करने की आवश्यकता है। (FIG.15)

### सारणी 2.18

<table>
<thead>
<tr>
<th>जन-गणना वर्ष</th>
<th>कुल</th>
<th>प्रति 1000 पुरुषों वर्षीय रिच्चों की संख्या</th>
<th>कुल</th>
<th>प्रति 1000 पुरुषों पर रिच्चों की संख्या</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td></td>
<td>ग्रामीण</td>
<td>नगरीय</td>
<td>ग्रामीण</td>
<td>नगरीय</td>
</tr>
<tr>
<td>1901</td>
<td>930</td>
<td>919</td>
<td>999</td>
<td>1961</td>
</tr>
<tr>
<td>1911</td>
<td>932</td>
<td>924</td>
<td>994</td>
<td>1971</td>
</tr>
<tr>
<td>1921</td>
<td>916</td>
<td>912</td>
<td>939</td>
<td>1981</td>
</tr>
<tr>
<td>1931</td>
<td>916</td>
<td>911</td>
<td>942</td>
<td>1991</td>
</tr>
<tr>
<td>1941</td>
<td>918</td>
<td>912</td>
<td>945</td>
<td>2001</td>
</tr>
<tr>
<td>1951</td>
<td>913</td>
<td>904</td>
<td>952</td>
<td>2011</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्रोत – भारत की जनगणना, 1901 से 2011, बूढ़ी।
<table>
<thead>
<tr>
<th>क्रं सं</th>
<th>जिला/तहसील</th>
<th>ग्रामीण जनसंख्या पुरुष/स्त्री अनुपात</th>
<th>क्रं सं</th>
<th>जिला/नगर</th>
<th>शहरी जनसंख्या पुरुष/स्त्री अनुपात</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1</td>
<td>हिंदोली</td>
<td>930</td>
<td>1</td>
<td>हिंदोली</td>
<td>—</td>
</tr>
<tr>
<td>2</td>
<td>नैनवां</td>
<td>916</td>
<td>2</td>
<td>नैनवां</td>
<td>926</td>
</tr>
<tr>
<td>3</td>
<td>केशोराय पाटन</td>
<td>933</td>
<td>3</td>
<td>केशोराय पाटन</td>
<td>943</td>
</tr>
<tr>
<td>4</td>
<td>इन्द्रगढ़</td>
<td>928</td>
<td>4</td>
<td>इन्द्रगढ़</td>
<td>908</td>
</tr>
<tr>
<td>5</td>
<td>बून्दी</td>
<td>926</td>
<td>5</td>
<td>बून्दी</td>
<td>929</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्रोत — भारत की जनगणना, 2011 बून्दी।

बून्दी जिले में लिंगानुपात (2011)

संकेत
- ग्रामीण लिंगानुपात
- शहरी लिंगानुपात
- कुल लिंगानुपात

(आरेख 2.10)
साक्षरता :-

बूढी जिले में 2001 में साक्षरता 55.57 प्रतिशत थी जिसमें पुरुष 71.68 एवं महिलाओं मात्र 37.79 प्रतिशत थी। जो 2011 में बढ़कर कुल साक्षरता 61.52 प्रतिशत है, जिसमें पुरुष साक्षरता 75.44 प्रतिशत एवं महिलाओं की साक्षरता 46.55 प्रतिशत है। अतः भी स्त्री-पुरुष साक्षरता दर में काफी अन्तर है। जिले के सभी वर्गों में अर्थात शहरी, ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में महिलाओं की साक्षरता दर पुरुषों की साक्षरता दर से कम है। (FIG.16)

तात्त्विका 2.20 एवं आरेख 2.11 से स्पष्ट है कि केंद्रीय पाटन तहसील में सर्वाधिक सामान्य साक्षरता (68.05 प्रतिशत) एवं ग्रामीण साक्षरता (64.56 प्रतिशत) है। न्यूनतम साक्षरता स्तर हिण्डोली तहसील में है जहां साक्षरता 53.92 प्रतिशत है। नगरीय साक्षरता भी न्यूनतम दर भी हिण्डोली में 22.36 प्रतिशत है, जिसमें पुरुष साक्षरता 28.57 प्रतिशत एवं महिला साक्षरता दर मात्र 15.49 प्रतिशत ही है। हिण्डोली तहसील में शिक्षा सुविधाओं का विकास कर साक्षरता दर बढ़ाने के प्रयास अपेक्षित हैं।

जिले में साक्षरता दर राज्य की औसत साक्षरता दर 66.01 प्रतिशत से कम है। जिले में 2012–13 में कुल 2146 विद्यालय संचालित हैं, जिनमें सन्त 2012–13 तक 284061 विद्यार्थी अध्ययन कर रहे हैं। सामान्य शिक्षा एवं व्यवसायिक शिक्षा देते हुए 6 महाविद्यालय अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं।

व्यवसायिक संचालन :-

जिले की कुल जनसंख्या में से कुल कार्यशील लोगों की संख्या 522903 (2011) है अर्थात् 47.07 प्रतिशत कार्यशील है, जिसमें पुरुष 312347 अर्थात् 55.12 प्रतिशत एवं महिलाओं 210594 अर्थात् 39.44 प्रतिशत कार्यशील जनसंख्या में सहायकिता रखती है। सर्वाधिक कार्यशील जनसंख्या हिण्डोली तहसील में 55.56 प्रतिशत है, यहाँ न्यूनतम काम करने वाली संख्या 44.44 प्रतिशत है। हिण्डोली में पुरुषों व महिलाओं भी कमाण्ड 58.39 एवं 52.5 प्रतिशत है, जो जिले में सर्वाधिक है।
<table>
<thead>
<tr>
<th>क्र. स.</th>
<th>तहसील</th>
<th>2011</th>
<th>ग्रामीण</th>
<th>नगरीय</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td></td>
<td>सामान्य पुरुष साक्षरता प्रतिशत</td>
<td>पुरुष साक्षरता प्रतिशत</td>
<td>स्त्री साक्षरता प्रतिशत</td>
<td>सामान्य पुरुष साक्षरता प्रतिशत</td>
</tr>
<tr>
<td>1</td>
<td>बूढ़ी</td>
<td>63.3</td>
<td>75.95</td>
<td>50.34</td>
</tr>
<tr>
<td>2</td>
<td>हिन्द़ोली</td>
<td>53.92</td>
<td>68.58</td>
<td>38.13</td>
</tr>
<tr>
<td>3</td>
<td>इन्द्रगढ़</td>
<td>65.54</td>
<td>80.34</td>
<td>49.57</td>
</tr>
<tr>
<td>4</td>
<td>के.पाटन</td>
<td>68.05</td>
<td>81.66</td>
<td>53.5</td>
</tr>
<tr>
<td>5</td>
<td>नैनवां</td>
<td>57.83</td>
<td>73.91</td>
<td>40.48</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्त्रोत — जिला जनगणना बुक— 2011।

(आरेख 2.11)
### सारणी- 2.21
#### कुन्दी जिले की सामान्य जनसंख्या का आर्थिक वर्गीकरण-2011

<table>
<thead>
<tr>
<th>सामान्य जनसंख्या %</th>
<th>कुल कमालर %</th>
<th>मुख्य कमालर %</th>
<th>मुख्य कमालर %</th>
<th>सीमान्त कमालर %</th>
<th>कमाल करने वाले %</th>
<th>क्रम %</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>हिंदोस्तानी</td>
<td>55.56</td>
<td>43.22</td>
<td>68.94</td>
<td>9.62</td>
<td>1.47</td>
<td>19.97</td>
</tr>
<tr>
<td>M</td>
<td>58.39</td>
<td>47.93</td>
<td>65.32</td>
<td>8.16</td>
<td>1.59</td>
<td>24.93</td>
</tr>
<tr>
<td>F</td>
<td>52.52</td>
<td>44.32</td>
<td>76.71</td>
<td>12.73</td>
<td>1.21</td>
<td>9.35</td>
</tr>
<tr>
<td>नेपाली</td>
<td>45.73</td>
<td>65.31</td>
<td>64.22</td>
<td>9.73</td>
<td>2.21</td>
<td>23.88</td>
</tr>
<tr>
<td>M</td>
<td>52.09</td>
<td>61.01</td>
<td>70.73</td>
<td>11.11</td>
<td>2.33</td>
<td>22.84</td>
</tr>
<tr>
<td>F</td>
<td>45.06</td>
<td>49.07</td>
<td>50.87</td>
<td>11.73</td>
<td>1.21</td>
<td>14.13</td>
</tr>
<tr>
<td>इ-ड्रागून</td>
<td>42.41</td>
<td>64.05</td>
<td>30.60</td>
<td>12.14</td>
<td>1.73</td>
<td>46.39</td>
</tr>
<tr>
<td>M</td>
<td>52.24</td>
<td>40.28</td>
<td>40.53</td>
<td>8.83</td>
<td>1.71</td>
<td>48.94</td>
</tr>
<tr>
<td>F</td>
<td>31.72</td>
<td>37.03</td>
<td>36.46</td>
<td>24.79</td>
<td>2.08</td>
<td>36.67</td>
</tr>
<tr>
<td>कोलकाता</td>
<td>43.33</td>
<td>64.14</td>
<td>47.84</td>
<td>22.04</td>
<td>2.21</td>
<td>27.55</td>
</tr>
<tr>
<td>M</td>
<td>52.91</td>
<td>40.52</td>
<td>30.17</td>
<td>17.64</td>
<td>2.17</td>
<td>30.02</td>
</tr>
<tr>
<td>F</td>
<td>33.08</td>
<td>34.25</td>
<td>38.32</td>
<td>39.99</td>
<td>4.22</td>
<td>17.47</td>
</tr>
<tr>
<td>कुल</td>
<td>45.33</td>
<td>64.47</td>
<td>43.32</td>
<td>13.08</td>
<td>1.99</td>
<td>41.61</td>
</tr>
<tr>
<td>M</td>
<td>54.97</td>
<td>39.56</td>
<td>39.56</td>
<td>10.71</td>
<td>1.86</td>
<td>47.87</td>
</tr>
<tr>
<td>F</td>
<td>34.92</td>
<td>58.87</td>
<td>52.75</td>
<td>19.01</td>
<td>2.33</td>
<td>25.91</td>
</tr>
</tbody>
</table>

(आपेक्ष 2.12)
न्यूनतम कार्यशील का प्रतिशत सामान्य जनसंख्या का 42.4 प्रतिशत
हंद्रगढ़ का है। सामान्य जनसंख्या की आर्थिक श्रेणियों का सामाजिक स्वरूप
सारणी 2.21 एवं आरेख 2.12 से सप्त है।
जिले की तहसीलवार जनसंख्या के आर्थिक वर्गीकरण के तीन वर्ग हैं—
पुरूष कामगार, सीमान्त कामगार तथा काम न करने वाले। उपवर्ग—काश्तकार,
खेतीकर मजदूर, पशुपालक, जंगलिया, मछली पकड़ना, शिकार, बागान, विनिर्माण
संसाधन कुटीया उद्योग, मरम्मत उद्योग (पारिवारिक या गैर पारिवारिक) निर्माण,
व्यापार एवं वाणिज्य, परिवहन समारूह और संचार, अन्य सेवाएं देने वाली
जनसंख्या तथा काम न करने वाली जनसंख्या है।
लालिका संख्या 2.21 एवं आरेख 2.12 के अवलोकन से सप्त होता है कि
काम नहीं करने वाली जनसंख्या का प्रतिशत 52.93 है जिसमें 0–6 वर्ष की
आयु वर्ग के बालक—बालिकाएं भी समिलते हैं। काम नहीं करने वालों की
श्रेणी में 0 से 14 वर्ष की आयु वर्ग के अधिकांश लोग व 70 वर्ष से अधिक आयु
वर्ग के लोग काम नहीं करने वाले लोगों की श्रेणी में माने जा सकते हैं। काम
न करने वालों में 60.56 प्रतिशत महिलाएं तथा 44.88 प्रतिशत पुरुष आते हैं।
आयी महिला संख्या जो काम नहीं करती हैं, उन्हें स्वयं सहायता समूह केंद्रों में
लागाकर कुटीया उद्योग द्वारा विभिन्न आवश्यक खाद्य पदार्थ, दैनिक उपयोग की
वस्तुएं, उत्पादित कर जिले की आर्थिक समृद्धि में योगदान करवाया जा सकता
है।